मधुबन ओम् शान्ति अंक 284 मार्च 2016

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(10-02-16)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा विश्व कल्याण की सेवा पर उपस्थित, शिव भोलानाथ बाप को राज़ी कर सर्व वरदानों से अपनी झोली भरने वाले, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ 80वें हीरे तुल्य शिव जयन्ती सो गीता जयन्ती की आप सबको बहुत-बहुत दिल से हार्दिक बधाईयां।

आप सभी भिन्न-भिन्न सेवाओं के कार्यक्रमों द्वारा अपने प्यारे शिव भोलानाथ बाप को प्रत्यक्ष करने की सेवा तो सदा करते ही हो। पिछले 80 वर्षो से कितना गुप्त रीति से निराकार शिवबाबा अपने साकार वा अव्यक्त पार्ट द्वारा हम सब बच्चों की अलौकिक पालना कर रहे हैं। अब बापदादा यही चाहते हैं कि बच्चे भी बाप समान बन अपनी दिव्य चलन और चेहरे द्वारा विश्व के कोने-कोने में परमात्म अवतरण का दिव्य सन्देश देकर सबको मुक्ति जीवनमुक्ति के वर्से का जन्म सिद्ध अधिकार दिलायें। उसके लिए अभी भी आप सब सेवाओं की नई-नई योजनायें बनाकर, सदा उमंग-उत्साह से चारों ओर सन्देश देने की सेवा तो करेंगे ही। मैं भी कल बहेरीन से होकर आई हूँ, वहाँ भी बहुत अच्छी सेवायें हो रही हैं।

यहाँ अभी ईस्टर्न/तामिलनाडु/नेपाल ज़ोन के हजारों भाई बहिनों की रिमझिम लगी हुई है। प्यारे अव्यक्त बापदादा भी बच्चों को थोड़े समय में ही अपनी शक्तिशाली दृष्टि वा दिव्य वरदानों से भरपूर कर देते हैं। संगम के इस सुहावने समय में परमात्मा कहे मेरे बच्चे और बच्चे कहें मेरा बाबा, इससे भी कितनी अचल अडोल सहजयोगी स्थिति बन जाती है। बाबा ने पक्का कराया है बच्चे, जो बीत गई उसका चिंतन नहीं करो और भविष्य की कोई आश नहीं रखो। सहजयोगी होकर चलो। मीठे बाबा ने हम बच्चों को न्यारे और प्यारे रहने की बहुत अच्छी गिफ्ट दी है। हिम्मत बच्चे की, मदद बाप की यही लाइफ है, सच्चे दिल पर साहेब राज़ी है। करावनहार मेरा साथी है, सिर्फ मुझे साक्षी होकर हर आत्मा के पार्ट को समझते हुए सबको रिगार्ड और स्नेह देने का रिकार्ड अच्छा रखना है। भाग्य अनुसार कभी यह इच्छा भी नहीं उठती कि मुझे यह चाहिए। बाबा ने शुरू से सिखाया है बच्चे सभी बीमारियों की दवाई है - कभी न किसी से दु:ख लो, न किसी को दु:ख दो। सदा ऐसे कर्म करो जो सबको शान्ति, प्रेम और खुशी मिले। तो उसके रेसपाण्ड में मेरे अन्दर अशान्ति आ नहीं सकती।

समय प्रमाण अब हर एक को चारों ही सबजेक्ट में फुल अटेन्शन देना है। बाबा कहते बच्चे जो करना है अब कर लो, कल किसने देखा, इससे बहुत दुआयें मिलेंगी और सबका स्नेह, प्यार, सकाश भी मिलता रहेगा। अगर कोई रोने वाला बच्चा है तो वो माँ बाप से प्यार खींच नहीं सकता। जो हंसता खेलता है उन्हें सब प्यार से गोद में बिठाते हैं। हम गोप-गोपियों का प्रेम है मुरली से, बाबा की मुरली एक दिन भी मिस न हो। मुरली से ही बाबा का रुहानी स्नेह झलकता है। मेरी तो यही भावना है कि जो मैंने बाबा से भासना ली है वो सब अनुभव करें। दुआ भी मांगो नहीं लेकिन कर्म ऐसे हों जो सदा ही मुस्कराओ। आपका मुस्कराना देखकर दूसरे भी खुश हो जाएं। बोलो, हमारी मीठी मीठी सखियां, बहिनें भाई सदा ऐसे रूहानी स्नेह की सकाश लेते मौज़ का अनुभव करते हो ना! अच्छा -

सभी को बहुत-बहुत दिल से याद और महाशिवरात्रि की कोटि-कोटि बधाई!!!

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"दृढ़ता की चाबी द्वारा सफलता मूर्त बनो"

1) जैसे ब्रह्मा बाप ने दृढ़ संकल्प से हर कार्य में सफलता प्राप्त की, दृढ़ता ही सफलता का आधार बना। ऐसे फॉलो फादर करो। कभी कभी जो कहते हो कि यह विचार तो है, करना तो चाहिए... इसको दृढ़ संकल्प नहीं कहेंगे। दृढ़ संकल्प अर्थात् करना ही है, होना ही है। ''तो'' शब्द निकल जाता है। बनना तो है, नहीं। बनना ही है। यह लक्ष्य रखो तो ब्रह्मा बाप समान नम्बरवन हो जायेंगे।

2) दृढ़ता ही सम्पूर्णता को समीप लायेगी। सोच लिया, प्लैन बना लिया, लेकिन प्रैक्टिकल करने में यदि कोई परिस्थिति सामने आवे तो संकल्प में दृढ़ता लाओ कि करना ही है। ऐसी दृढ़ता होगी तो प्लैन प्रैक्टिकल हो जायेगा। स्वयं प्रति भी जिस बात में मुश्किल समझते हो वो सहज अनुभव कर सकते हो, सिर्फ क्वेश्चन मार्क को खत्म करो। दृढ़ता सफलता की चाबी है इस चाबी को यूज़ करो।

3) सफलता के सितारों की निशानी है कि उनके हर संकल्प में यही दृढ़ता होगी कि सफलता अनेक बार हुई है और अभी भी हुई पड़ी है। होनी चाहिए, होगी या नहीं होगी.. यह स्वप्न में भी कभी उनकी स्मृति में नहीं आयेगा। बल्कि उन्हें शत-प्रतिशत निश्चय होगा कि सफलता हमारी हुई ही पड़ी है। वे हर बात में निश्चय-बुद्धि होंगे और उनके बोल में ईश्वरीय सन्तान की खुमारी अर्थात् ईश्वरीय नशा दिखाई देगा।

4) लगन की अग्नि को पैदा करने की युक्ति व तीली है दृढ़ संकल्प। दृढ़ता अर्थात् मर जायेंगे, मिट जायेंगे लेकिन करना ही है। करना तो चाहिए, होना तो चाहिए, कर ही रहे हैं, हो ही जायेगा, अटेन्शन तो रहता है ...यह सोचना अर्थात् बुझी हुई तीली है इसलिए अग्नि प्रज्जवलित नहीं होती। तो संकल्प रूपी बीज को दृढ़ता रूपी सार से सम्पन्न बनाओ तो सफलता हुई पड़ी है।

5) नॉलेजफुल होने के नाते यह तो निर्णय कर लेते हो कि ये होना चाहिये लेकिन यदि वह नहीं होता तो उसका कारण है–दृढ़ता की कमी। संकल्प में दृढ़ता लाने से प्रत्यक्षफल निकल आता है। परिवर्तन करके सफल बनना ही है–यह है दृढ़ संकल्प। सफलता तो आपका आह्वान कर रही है कि सफलता-मूर्त आयें तो मैं उनके गले की माला बनूँ।

6) जो नॉलेजफुल हैं अर्थात् जिनमें लाइट और माइट दोनों हैं वह कभी माया से हार नहीं खा सकते। हार खाने का कारण है संकल्पों में दृढ़ता की कमी। संकल्प करते हो कि यह करेंगे लेकिन दृढ़ता न होने के कारण सोचने-करने में फर्क पड़ जाता है। संकल्प में दृढ़ता हो तो सोचना और करना दोनों समान हो जाएं। इन दोनों में समानता ही तीव्र पुरुषार्थ है।

7) जैसे दिलवाड़ा मन्दिर में हरेक कमरे की विशेषता अपनी है, हर एक की डिज़ाइन अलग-अलग वैरायटी है इसलिए यह मन्दिर सब मन्दिरों से न्यारा है। मूर्तियां तो औरों में भी होती हैं लेकिन इस मन्दिर में जहाँ जाओ वहाँ विशेष कारीगरी है। ऐसे इस चैतन्य दिलवाड़ा मन्दिर में भी जिसको देखें, उसकी एक दो से आगे विशेष विशेषता दिखाई दे। ऐसे विशेषता सम्पन्न बनने के लिए दृढ़ता को धारण करो।

8) दृढ़ता सफलता को लाती है, जहाँ दृढ़ता है वहाँ सफलता हुई पड़ी है। कभी भी सेवा में दिलशिकस्त नहीं होना क्योंकि अविनाशी बाप का अविनाशी कार्य है। सफलता भी अविनाशी होनी ही है। सेवा का फल न निकले, यह हो नहीं सकता। कोई उसी समय निकलता है, कोई थोड़ा समय के बाद इसलिए कभी भी कमजोर संकल्प नहीं करना।

9) शक्तिशाली आत्मा सदा दृढ़ता की चाबी के अधिकारी होने कारण सफलता के खजाने के मालिक अनुभव करते हैं। सदा सर्व प्राप्तियों के झूलों में झूलते रहते हैं। सदा अपने श्रेष्ठ भाग्य के मन में गीत गाते रहते हैं। सदा रुहानी नशे में होने कारण पुरानी दुनिया की आकर्षण से सहज परे रहते हैं।

10) अगर कोई भी संकल्प को रोज़ रिवाइज करते रहो तो जैसे कोई भी चीज़ पक्की करते जाओ तो पक्की हो जाती है। ऐसे जो संकल्प करते हो उसे छोड़ नहीं दो, रोज़ उस संकल्प को रिवाइज़ कर दृढ़ करो तो फिर यही दृढ़ता सदा कार्य में आयेगी। तो किये हुए संकल्प को रोज़ रिवाइज करो और रोज़ बाप के आगे रिपीट करो तो पक्का होता जायेगा और सफलता भी सहज मिलेगी।

11) पुरूषार्थ करेंगे, देखेंगे, यह नहीं। करना ही है क्योंकि दृढ़ता सफलता की चाबी है। यह ऐसी चाबी है जो खजाना चाहिए वह संकल्प किया और खजाना मिला। यह चाबी

सदा साथ रखना अर्थात् सदा सफलता पाना। ब्राह्मण जीवन में जन्मते ही यह वायदा किया है ना – साथ रहेंगे साथ चलेंगे। यह वायदा भी दृढ़ पक्का किया है ना! जहाँ दृढ़ता है वहाँ सफलता है। दृढ़ता कम तो सफलता भी कम।

12) कोई भी बात हो, उसमें सफलता प्राप्त करने के लिए संकल्पों में दृढ़ता और संगठन में स्नेह चाहिए। दृढ़ता कलराठी जमीन में भी फल पैदा कर सकती है। जैसे आजकल साइंस वाले रेत में भी फल पैदा करने का प्रयत्न कर रहे हैं। तो साइलेन्स की शक्ति क्या नहीं कर सकती है! जिस धरनी को स्नेह का पानी मिलता है वहाँ के फल बड़े भी होते और स्वादिष्ट भी होते हैं।

13) दृढ़ संकल्प कभी सफल न हो यह हो नहीं सकता। अगर थोड़ा भी दिल-शिकस्त हो जाते कि यहाँ तो होना ही नहीं है। तो अपना थोड़ा सा कमजोर संकल्प सेवा में भी फर्क ले आता है। दृढ़ता का पानी फल जल्दी निकालता है। दृढ़ता ही सफलता लाती है।

14) तपस्या अर्थात् दृढ़ता सम्पन्न अभ्यास। साधारण को तपस्या नहीं कहेंगे। तो अभी तपस्या के लिए समय दे रहे हैं। यह समय आपके बहुतकाल में जमा हो जायेगा। प्यार की निशानी है जो कहा वह करके दिखाना। हर एक यही सोचें कि हम नहीं करेंगे तो कौन करेगा! हमको करना ही है, बनना ही है। कल्प-कल्प की बाजी जीतनी है। फर्स्ट डिवीजन में आना है तो यह दृढ़ता धारण करनी है।

15) प्रोग्राम प्रमाण प्रोग्रेस नहीं करना, दिल की प्रोग्रेस हो। दिल के उमंग से प्रोग्रेस की भट्ठी हो इसके लिए स्वयं दृढ़ संकल्प करो। दृढ़ता रखो कि मुझे बदलना है। मुझे ''हे अर्जुन'' बनना है। मास्टर ब्रह्मा बनना है। तपस्या अर्थात् ऐसी एकाग्रता और दृढ़ता।

16) अगर मन-बुद्धि जरा भी विचलित हो तो दृढ़ता से उसे एकाग्र कर लो। करना ही है, होना ही है। यह सब जो भी कमजोरियां हैं उनको तपस्या की योग अग्नि में भस्म करो। दृढ़ प्रतिज्ञा उसे कहा जाता है जो कैसी भी परिस्थितियां हों लेकिन पर-स्थिति, स्व-स्थिति को हिला न सके। कभी भी किसी भी हालत में हार नहीं हो। तो 'दृढ़ता' शब्द को अन्डरलाइन करना।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 11-5-13 *मधुबन*

"निष्काम सेवाधारी वह है जिसे मनी, मान की भूख नहीं, सेवाधारी माना सच्ची दिल बड़ी दिल"

(दादी जानकी)

अकेले होते भी अनेकों के साथ मिलकर अगर चलते हैं तो कोई मुश्किल नहीं है। कोई कहता है कि बड़ा मुश्किल है तो मुझे दया आती है यह सिर्फ कहता है, पर करता कुछ नहीं है। हमेशा रोता रहता है। किसी की बात को समझने के लिए बड़ी दिल हो क्योंकि आजकल कोई किसी की बात को समझने की कोशिश नहीं करता है। मुस्करा तभी सकते हैं जब बड़ी बात को छोटा बनाना आता है, छोटी को बड़ा नहीं बनाओ। छोटी बात को सोचके बड़ा बनाते हैं तो जो खुद ही बड़ा बनाता है वह औरों पर क्या दया करेगा? उसका माइण्ड बिचारा एक मिनट भी शान्त नहीं होता है। दिल में एक मिनट के लिए भी किसी के प्रति प्यार नहीं पैदा होता है। मन में शान्ति, दिल में प्यार हो। उसके लिए ऐसी बातों को समझके पहले अपने ऊपर रहम करो। दया, रहम, कृपा, आशीर्वाद, इनसे भी सूक्ष्म सकाश है। तो जिसके पास सुख होगा, वो देने बिगर रह नहीं सकेगा। न दु:ख देना, न लेना इसको कहा जाता है दया, रहम, कृपा की। प्रैक्टिकली अनुभव जो है वो औरों को सुख देता है। इसके लिए अपने मन को अन्दर से सच्चाई, प्रेम, खुशी से शक्तिशाली बनाओ, खुद को प्यार करो। कईयों को खुद को प्यार करने के लिए टाइम नहीं है, तो औरों को कैसे प्यार करेंगे इसलिए पहले मैं खुद को प्यार करूँ।

परमात्मा बाप ने शिक्षाओं को धारण करने के लिए जो शक्ति दी है, उससे जो न काम की बात है वो अन्दर जाती नहीं है, इसमें बाहर की बात अन्दर न जावे - यह है अपने से प्यार करना, अपने पर दया करना। अगर सुबह से लेके यह बात... वह बात है...

तो वो क्या दया करेगा? अरे, मेरा धर्म है शान्त रहना। सच्चाई और प्रेम से सबको रिगार्ड देना, रिस्पेक्ट देना, इससे औरों के मन में आपके प्रति रिगार्ड पैदा होगा। पहले परिवर्तन का रिकॉर्ड अच्छा हो। हमारा काम है सेल्फ रिस्पेक्ट में रहना, सबको रिस्पेक्ट देना। छोटों को स्नेह दो, बच्चे बिचारे क्यों ऐसे नाराज़, दु:खी रहते हैं क्योंकि बच्चों को बचपन से ले करके माँ-बाप का स्नेह नहीं मिलता है। भाई-बहनों का प्यार नहीं मिलता है। छोटे बच्चों में भी ईर्ष्या होती है, मम्मी इसको ज्यादा प्यार करती, मेरे को नहीं। मैं तो संसार समाचार से दूर रहती हूँ पर प्रैक्टिकल क्या हो, यह भावना है। सभी आज के दिन ऐसा अपने आप में ले लो, जो हजारों को दे सको। इसके लिए अपने को ठीक से टाइम दो, इसमें एक्स्ट्रा समय देने की बात नहीं है या इसमें टाइम लगने की भी बात नहीं है। सिर्फ समय को यथार्थ सफल करने की बात है।

शान्त में रहने के लिए बीच में कोई पुरानी बात का संकल्प याद न आवे, तो वो वायब्रेशन बड़े पॉवरफुल होते हैं, जिससे कदम-कदम पर सावधान रहने की समझ मिली है, उनके प्रति सम्मान दिल से निकलता है। और कोई कहे यह भी ऐसे करता है या ऐसे किया है, तो यह है डिसरिगार्ड। जिसको जो कहना वा करना है करे, पर मैं शान्ति और प्रेम नहीं छोड़ूँ। सामने वाला कितना भी कुछ बोले, पर मेरी शक्ल चेंज न हो। ऐसे नहीं क्या बोलती हो? तो इसमें हर बात एक्सेप्ट करो, एक्सपेक्ट नहीं करो। (स्वीकार करो लेकिन उम्मीदें नहीं रखो)। मैं किसी के लिए कुछ एक्सपेक्ट करूँ और वो और कुछ करे तो मैं सेल्फ रिस्पेक्ट में नहीं रह सकूंगी। सेल्फ रिस्पेक्ट में रहने के लिए बहुत अच्छा मटेरियल है, उसको यूज़ करो तो खुशी जैसे खुराक के मुआफिक काम करती है। सूक्ष्म है, मैं अपनी सीट पर सेट रहूँ और कभी अपसेट न हो जाऊं। जरा भी मेरे फेस में चेंज न आवे। आजकल देखा गया है ईर्ष्या वश सुखी को देख सहन नहीं करते, दु:खी को मदद नहीं करते। सारे विश्व में इस प्रकार का व्यवहार हो इन्सान का जो दु:ख, अशान्ति, हिंसा चली जाये। इसके लिए जो सुख हमने पाया है वह वायब्रेशन सब तक पहुँचें। बुद्धि बेहद में हो, कोई मनी मान की भूख नहीं है। मुझे मनी मिले, मान मिले तो वह निष्काम सेवाधारी नहीं है। सेवाधारी माना सच्ची दिल, बड़ी दिल। रिटर्न क्या दे रहे हैं, ऐसा ख्याल वा कोई एक्सपेक्ट नहीं करना है। परन्तु यह भी बाबा ने बताया है बच्चे, तुम सेवा करते चलो, आखिर जिसके सामने कोई परीक्षा आती है, तो यही घड़ी याद आयेगी, यह संगठन याद आयेगा। उसमें पेशेन्स, पीस, लव प्रैक्टिकली लाइफ में हो। अच्छा।

दूसरा क्लास

"लास्ट आते भी पुरुषार्थ में फास्ट जाना है तो सिर्फ ज्ञान की गहराई में जाओ, समय का कदर करो, संकल्प को ऊंचा बना लो"

मैं सन्देशी नहीं हूँ पर जब भोग लगाने बैठती हूँ तो मुझे खैंच होती है जैसे बाबा खींच रहा है। जब बाबा को भोग स्वीकार कराया जाता है, उस घड़ी स्पेशल संगठन में बैठने का दूसरा बाबा को भोग स्वीकार कराने का अनुभव अच्छा होता है। बाबा को भी खैंच होती है। जब भारत में सेवायें शुरू हुई तो भोग लगाते-लगाते कई बहनें सन्देशी बन गयी, नहीं तो पहले इतनी सन्देशियाँ नहीं थी। तो समझा जाता था सन्देशी भोग लगावे। कलकत्ता में छोटे-से सेन्टर में 15-20 बहन भाई होंगे, बाथरूम भी अपना नहीं था। जब मैं उस समय वहाँ भोग लगाने बैठी, तो वो अनुभव आज दिन तक नहीं भूलता है। बाबा कहेगा सिर्फ भोग की ट्रे नहीं लेके आओ। आ जाओ मेरे पास। यह क्यों सुनाती हूँ? इस जीवन यात्रा में हर प्रकार का अनुभव हर एक को करना चाहिए, कोई भी अनुभव कोई को छोड़ना नहीं है। तो परोक्ष, अपरोक्ष साक्षात्कार मूर्त, सफलता मूर्त बनने में यह अनुभव भी बहुत मदद करता है।

मैंने जगदीश भाई को देखा, जब से बाबा का बच्चा बना तब से चारों ही सबजेक्ट में ज्ञान, योग, धारणा, सेवा का अनुभव बहुत अच्छा किया। बाबा से इतना खज़ाना मिलता है वो सब अनुभव लिख करके औरों तक पहुँचाने के निमित्त बना। तो जगदीश भाई ने सबसे पहला बुक लिखा, परमात्मा का नाम, रूप, देश, काल, समय, कर्तव्य के बारे में, इतना अच्छा बुक लिखा जिसे देख हम सब खुश हुए, दीदी खुश हुई। बहुत बड़ी इसकी स्टोरी है, उसने हमारे यज्ञ के हिस्ट्री में अपना यादगार अच्छा बनाया है। विदेश सेवा शुरू करने में भी जगदीश भाई निमित्त बना। दीदी ने जगदीश भाई को बोला, दीदी ने कहा जाके जानकी का सिर खा, तो मेरे कमरे में मेरे पास जगदीश भाई आया। उन दिनों साकार में विदेश का कोई पत्र आता था तो बाबा मुझे वो पत्र देता था। बाबा के अव्यक्त होने के बाद वो सब संकल्प साकार हो गये। ड्रामा अनुसार अव्यक्त बापदादा की प्रेरणा से अभी भी ऐसा कोई बाबा को प्रत्यक्ष करने का कुछ करे ना! कहने का भाव यह है कि हमारे ऊपर सारी दुनिया को बदलने का आधार है क्योंकि हमें इतनी पालना, पढ़ाई इतनी प्राप्ति हुई है, तो विश्व का एक कोना भी रह न जाये। हर एक को यह पता पड़े मेरा बाबा कौन! भले सतयुग में न भी आवे, लेकिन भावना है शान्तिधाम में भी जाने वाली आत्माओं को मौत के समय खुशी हो मैं जा रहा हूँ परमधाम में। अब नाटक में समय पूरा हुआ, यह सबको अच्छी तरह से पता पड़ जाना चाहिए।

हम सबके सामने भी विनाश का वो नज़ारा स्पष्ट बुद्धि में होना चाहिए। जिसके सामने विनाश का दृश्य रहता है, वह विश्व में कहीं भी रहे उसके लिए शान्ति है। आत्मा अविनाशी है, बाबा अविनाशी है, उनसे जो खज़ाना मिलता है वो भी अविनाशी है। अभी जो प्राप्ति बाबा से हो रही है, जैसे आज बाबा ने कहा अपना फरिश्ता रूप इमर्ज करो। मैं आत्मा, परमात्मा का बच्चा हूँ। क्राइस्ट, बौद्ध, गुरुनानक से भी मैं ऊंचा हूँ, अभिमान नहीं है पर रीयली है। हमको बाबा नीचे से ऊपर ले जाने के लिए आया है। तो रहना है ऊपर, निमित्त मात्र यहाँ हैं। फरिश्ता स्वरूप की स्थिति तब बनेगी जब यहाँ निमित्त मात्र हैं, यह कार्य हुआ ही पड़ा है। जैसे ब्रह्माबाबा निमित्त मात्र है। जो बच्चा एडोप्ट होता है उसको बड़ा नशा होता है, पहले कैसा था, किसका था और अभी ऐसा हूँ, इसका हूँ, ऐसे वह नशा हो कि मैं परमात्मा का हूँ और मेरा फरिश्ता स्वरूप है, यहाँ सेवा के लिए सिर्फ निमित्त मात्र हैं ... तो इससे उड़ने के पंख आ जाते हैं। उसके पहले ब्रह्मा बाप समान गृहस्थी से ट्रस्टी बनना सीखना पड़ेगा। ट्रस्टी माना मेरा कुछ नहीं, तो फ्री हैं जैसे मैं फ्री हूँ क्योंकि मुझे किसी का फिक्र नहीं है, तब सब अच्छे चल रहे हैं, मैं देख रही हूँ, बाबा भी देख रहा है। बाबा कहता है मेरे साथ रह करके साक्षी हो करके देखो। किसी को अगर अभी तक भी कौरवों जैसी थोड़ी भी माया आती हो तो उसको पाण्डव नहीं माना जायेगा। पाण्डव है तो प्रभु ही सब कुछ है, लाइट है, मेरा जी चाहता है आप सबकी लाइफ ऐसी हो। कौन पसंद करता है सबके साथ मिल करके चलना। चलते-चलते कोई मिल गया... चलते-फिरते खुश रहने में कोई मेहनत न लगे। खुशी पंख का काम करती है। हारमनी माना जरा भी अभिमान की अंश न हो, तब खुद भी खुश रह सकेंगे और अन्य को भी खुश कर सकेंगे। नहीं तो जैसे एक अन्धा, दूसरा अन्धेरा तो उन बिचारों का क्या हाल होगा! बाबा आकर अन्धों को आँखें देता है, अन्धियारे से बचाकर रोशनी देता है। रोशनी हो पर नयन न हों तो कोई काम का नहीं। नयन हो पर रोशनी न हो तो कोई काम का नहीं। तो कितना भगवान हमारे लिए दया, कृपा, रहम का सागर है। बाप की याद से पास्ट के पाप कर्मों से फ्री हो जाते हैं। कोई भूल वा विकर्म हो जाता है तो उसे फॉरगिव करके फॉरगेट करो और आगे से ऐसी भूल न हो, यह ध्यान रखना होगा। ज्ञानी तू आत्मा वो जो ध्यान रखे। ज्ञान माना ध्यान। ध्यान माना ऐसे ट्रांस में जाने की बात नहीं, पर ट्रांसपेरेंट स्टेज ध्यान में रहे। टेंशन फ्री, कोई टेंशन नहीं हो, नहीं तो कई हैं जो अपना बहुत सा समय सोच में गँवाते हैं। अगर ऐसी स्थिति बनानी है तो असोचता, अभोक्ता बनना होगा, उसके लिए त्याग वृत्ति, सेवा में अनासक्त वृत्ति फिर उपराम वृत्ति।

लेट आये हुए भी कोई अगर पुरुषार्थ में फास्ट जाना चाहें तो जा सकते हैं, सिर्फ ज्ञान की गहराई में जावें, समय का कदर करें, संकल्प को ऊंचा बनायें। त्याग वृत्ति से तपस्वी मूर्त बनने में बड़ा मजा है। आज्ञाकारी, सेवाधारी बच्चा होकर रहने में बहुत सुख है। निमित्त भाव, नम्रता स्वरूप हो, अभिमान का नाम-निशान न हो तब है सेवा क्योंकि प्रैक्टिकल का प्रभाव पड़ता है। चलते-फिरते भी किसी को अनुभव हो जाता है, बिना शब्दों के। उनकी दिल होती है इनसे कुछ बात करूँ, कुछ सुनूँ। कई बार ऐसी कुछ आत्मायें होती हैं जिन्हें मिलने मात्र से ही वह बहुत खुश होंगे। जिस समय जो करना है वो करके हर घड़ी को सफल करना है। किस

समय क्या करना है, वो करेंगे परंतु यह जो टाइम मिला है वो कल्प के बाद... आप कहेंगे फिर से लण्डन आना, किसने देखा। पर यह अभी जो आयी हूँ ना, बाबा ने भेजा है। आप लोगों की सेवा के निमित्त बनाया है, तो उसका लाभ लेना यही समय को सफल करना है, हर कल्प यह रिपीट होता रहेगा।

त्याग और सेवा का भाग्य तो है पर कोई अच्छा एक्जाम्पुल बनें, तो यह भी एक बहुत बड़ा भाग्य है। जो बहुत समय से त्याग और सेवा से अपना भाग्य बनाता आ रहा है, उनको देख करके कईयों के पुरुषार्थ में परिवर्तन आता है। हमारे भाग्य को देख और भी अपना ऐसा भाग्य बनाना शुरू कर दें – यह है मैं भाग्यवान हूँ, इसका सबूत। तो अभी ऐसा कौन है याद में बैठे और बाबा खैंच लेवे? याद करना न पड़े, बाबा के लव में लीन हो जाए। अच्छा।

5-9-15

"कन्ट्रोलिंग पॉवर द्वारा जैसा समय वैसा स्वरूप धारण करो"

(गुल्जार दादी)

अपना सतयुगी स्वरूप अनुभव कर रहे हो ना! (जन्माष्टमी पर) यहीं बैठे रहे या अनुभव किया? क्योंकि जैसा समय वैसा स्वरूप चेन्ज करना आना चाहिए। ऐसे नहीं गीत बज रहा है डांस का और मैं छुप रही हूँ, ये नहीं हो। जैसा समय वैसा रूप धारण करना चाहिए क्योंकि सभा में रौनक तभी आती है जब सब एकमत हों, तो जब डांस हो तो डांस करो, शान्ति हो तो शान्त रहो। सब रूप बदलने की आदत चाहिए। कैसे होगा, नहीं हमारे हाथ में है, हम अपनी बुद्धि को अपने हाथ में रखते हैं। जो हम चाहें वो कर सकते हैं। संगमयुग की यही विशेषता है अभी-अभी डांस, अभी-अभी योग, दोनों हमारे हाथ में हों। ऐसे नहीं कि डांस हो रहा है तो बस डांस के पीछे ही रहें, कन्ट्रोलिंग पॉवर हो। सबके हाथ में कन्ट्रोलिंग पॉवर है? हमारे में कन्ट्रोल होना चाहिए, जो चाहे वो रूप धारण कर सकें, ऐसी पॉवर है? देखो अपने में चेक करो। ऐसे नहीं बैठे यहाँ हो लेकिन बुद्धि नाच रही हो, सेकेण्ड में ब्रेक तो ब्रेक। कैसा भी वायुमण्डल हो एक सेकेण्ड में शान्ति तो शान्ति वो भी सहज हो। संकल्प में भी नहीं सोचो, करने के टाइम करो, खूब करो लेकिन कन्ट्रोल तो कन्ट्रोल इसको कहा जाता है - योग की सिद्धि। सिद्धि स्वरुप हो ना! तो कन्ट्रोलिंग पॉवर जरुर होनी चाहिए। जहाँ बाबा ले जाए वहाँ जाओ, रास करो तो खूब करो। हम मालिक हैं ना, ये भी अभ्यास चाहिए, ऐसा नहीं कि ट्रैफिक कन्ट्रोल चल रहा हो और हमारी बुद्धि डांस में ही लगी रहे क्योंकि समय अनुसार ऐसी परिस्थितियाँ आनी हैं, जिसमें ये प्रैक्टिकल करना पड़ेगा, उस समय कहेंगे कि आदत नहीं है, ये नहीं होगा। मैं मालिक हूँ, जो पॉवर चाहिए मैं यूज़ कर सकती हूँ। ऐसा अभ्यास है कि फिर भी दिल हो रही है उठें। जब चाहें कर्मेन्द्रियाँ हमारे ऑर्डर में हों, लूज़ नहीं हो। मैं मालिक हूँ, हैं ऐसे! ऐसी कन्ट्रोलिंग पॉवर चाहिए। समझो अभी चुप किया तो बुद्धि वहाँ नहीं जानी चाहिए। जैसे संगठन का स्वरूप हो वैसे प्रैक्टिकल हो। ऐसा समय आयेगा जब प्रैक्टिकल करना पड़ेगा तो अभ्यास कब करेंगे? अभ्यास तो अभी करना है ना। मैं मालिक हूँ, कर्मेन्द्रियों को जैसा ऑर्डर करूँ, वही हो। इशारा मिल रहा है अभी चुप हो जाओ और मैं बोलती रहूँ तो यह मैनर्स तो नहीं हुआ ना! तो समय अनुसार सेकेण्ड में कन्ट्रोल चाहिए। आज बाबा ने पाठ पढ़ाया कि कन्ट्रोलिंग पॉवर अपने हाथ में होनी चाहिए। ऑर्डर तो ऑर्डर। ऐसे कन्ट्रोलिंग पॉवर है? हाथ उठाओ। (सभी ने उठाये) ये तो खुशी की बात है जो सभी ने हाथ उठाया, उसकी मुबारक है, परन्तु समय पर कन्ट्रोलिंग पावर काम में आये। मानो क्रोध आ रहा है, उस समय अगर कन्ट्रोल होगा तो झगड़ा नहीं होगा। जब कभी भी कोई परिस्थिति आये तो पास का सर्टीफिकेट मिलना चाहिए। तो जो भी करें दिल से करें, जब पढ़ाई का समय हो तो पढ़ाई पर अटेन्शन चाहिए। आदत डालो कुछ भी हो लेकिन मन पर कन्ट्रोल हो। आपकी टॉपिक्स में मन को कन्ट्रोल करने का टॉपिक भी है ना! तो वो प्रैक्टिकल होना चाहिए, कैसा भी माहौल हो, ऑर्डर तो ऑर्डर हो सकता है? (सभी ने हाथ उठाये) मुबारक हो। (आज टीचर्स डे भी है, हमें महसूस हो रहा है कि हमारी दादी जी, प्रिंसीपल टीचर हम सब स्टूडेन्ट्स को क्लास करा रहे हैं) सभी टीचर्स हैं, चाहे बहनें हो चाहे भाई हो।

अच्छा - ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"निराकारी, निर्विकारी स्थिति द्वारा माया वा व्यर्थ संकल्पों की समाप्ति करो"

1) हम सभी के पुरुषार्थ का लक्ष्य है बाप समान बनना। अगर कल भी मेरा यह शरीर छूटे तो मैं बाप समान विजयी बनकर छूटे। बाप समान बनना माना सिर्फ यह नहीं कि मैं पुरुषार्थी हूँ। अगर ऐसी स्थिति है तो बाबा बाबा कहने के अधिकारी सच्चे नहीं हैं। तो हमें सूक्ष्म चेकिंग करनी है, निराकारी स्थिति बनाके व्यर्थ संकल्पों को भी खत्म करना है, तब कहा जाता है कि यह विजयी है। न व्यर्थ संकल्प हो, न व्यर्थ वाचा हो, न व्यर्थ समय जाये। रोज़ अपनी दिनचर्या में देखो कि आज सवेरे-सवेरे अमृतवेले ऐसी पॉवर भरी जो वह पॉवर हमारी सारा दिन हमें अनेक कार्य में मदद करे इसलिए अमृतवेले योग में बैठ बाबा से रूहरिहान करनी है, प्रेरणा वा शक्ति लेनी है। और फिर इस निराकारी स्थिति में रहने की दिन भर में बार-बार मेहनत करनी है। हर घण्टे सूक्ष्म अपना चार्ट देखना है।

2) हमारे सामने चेकिंग करने लिए बहुत बड़ा साधन है कि सदा बाबा को सामने देखो। सी फादर। भल बाबा साकार में नहीं है परन्तु आकारी अव्यक्त रूप में तो बाबा सदा हमारे सामने है। जब बाबा सामने है माना फरिश्ता स्थिति सामने है। जब फरिश्ता स्थिति सामने है तो स्वयं फरिश्ता हूँ, फरिश्ता हूँ, फरिश्ता हूँ...। जब फरिश्ता होकर रहेंगे तो दूसरों को भी ऐसी फरिश्ते भव की स्थिति की प्रेरणा देंगे। यही संगम की महान घडियाँ हैं जब ऊंचे-ते-ऊंचा पुरुषार्थ करना है जो मुझे देख अनेकों को प्रेरणा मिले और जब प्रेरणा मिलेगी तो रिटर्न में हमें दुआयें मिलेंगी। दुआयें मिलती हैं हमारी स्थिति को देखकर।

3) हम हमेशा अमृतवेले से रात तक देखती हूँ कि हर एक के मन, वचन, कर्म से हमें ऐसा फरिश्ता बनने की दुआयें मिलती हैं! इसके लिए हमारी दृष्टि, वृत्ति भी इतनी सम्पन्न बनें जो कल शरीर छूटे तो यह नहीं कि अरे! सम्पन्न तो बने नहीं। परन्तु स्थिति ऐसी हो जैसेकि हम आज भी बाप समान बने हैं और बाप समान बनने से अनेकों को स्वत: ही प्रेरणा मिलती रहती है। बाबा के आज भी ऐसे बच्चे हैं जो सर्व ब्राह्मणों को प्रेरणा देने वाले हैं। तो हम बच्चों को बाबा सदैव कहता ऐसे कर्म करो जो तुम्हें देख इन लाखों को प्रेरणा मिले। तो आप अपने को गृहस्थी नहीं कहो, ऐसे नहीं कि हम तो प्रवृत्ति वाले हैं, बाबा कहा माना गृहस्थीपना पूरा हुआ। ''मेरा बाबा'' माना समर्पण। नहीं तो मेरा बाबा नहीं। बाबा किसका है? ऐसे तो सभी का कहेंगे लेकिन प्रैक्टिकल में क्या है? तो मेरा बाबा कहना माना आप सभी बाबा को समर्पण हो गये और समर्पण बच्चे निमित्त हैं एक से अनेकों के लिए। और अनेक हमारे को देख कॉपी करेंगे जब हम अपनी स्थिति निराकारी, नष्टोमोहा बनायेंगे। अगर नष्टोमोहा नहीं तो समर्पण नहीं। नष्टोमोहा नहीं तो प्रभु प्रिय भी नहीं हैं। प्रभु प्रिय बनना है तो सदा मेरा बाबा, मेरा बाबा रटो। और मेरा बाबा माना ही दूसरा न कोई। जब दूसरा न कोई तो नष्टोमोहा हैं ही। जो नष्टोमोहा नहीं उनको दूसरे पोते-धोते आदि हैं। इसलिए बाबा कहते तन, मन, धन सब बाबा तेरा, मेरा नहीं।

4) आप सब कहाँ भी रहते मधुबन निवासी हो। जैसे लौकिक में कोई विदेश जाता तो उनको अपना परिवार याद आता, तो हमारा परिवार है मधुबन। सब आते जाते हो मधुबन। तन, मन, धन से सेवा करते हो मधुबन। तो यह मधुबन है आप सबका प्यारा घर इसलिए अगर कोई अच्छा कर्म भी करता तो बाबा अथवा मधुबन की शान है। अगर कोई गलती करता तो मधुबन की बदनामी होती है इसलिए सदैव बुद्धि में रोज़ सुबह पक्का करो कि हमसे एक मात्र भी ऐसी कोई गलती न हो जो मैं बाबा की बदनामी कराने के निमित्त बनूं। तो उसका पुरुषार्थ ही है कि खुद को सम्पूर्ण निर्विकारी बनाओ तब निरंहकारी बनेंगे। और सम्पूर्ण निर्विकारी का हर कर्म अकर्म होगा तब कर्मातीत बनेंगे। तब बाबा के साथ घर चलेंगे। बाबा रोज़ समय की सूचना देता है इसलिए समय को देख खुद को एवररेडी भी रखना है।

5) बाबा ने इतना सूक्ष्म में हम सबको सावधानी दी है जो कहाँ दृष्टि-वृत्ति भी अपवित्र नहीं हो। कोई भी शिकायत न

आये। हर एक ब्राह्मण को इतनी सूक्ष्म-से-सूक्ष्म सावधानी रखनी चाहिए। लौकिक में तो चाहे दुनिया में क्या भी करें, कैसे भी चलें, कैसे भी रहें, कैसे भी घूमें, कैसे भी खायें, परन्तु हमारी मर्यादा में किसी को अंगुली टच करना भी नॉट एलाऊ है। बाकी तो क्या? हमारी मर्यादा में कोई भी एक दो को विकर्म करने की मदद नहीं करे, परन्तु विकर्मों से बचाने में मदद करे इसलिए एक एक ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारी यह समझे, मेरी एक छोटी भूल हजारों को नोट हुई। जब कोई को कहो तेरी यह गलती है तो बुरा लगता है परन्तु यह नहीं सोचते कि मैंने कितना बुरा किया जो मेरे को हजारों ने देखा या सुना इसलिए हमारी खुद के ऊपर सवेरे से रात तक हर कर्म में बहुत सावधानी चाहिए।

6) ब्राह्मणों के लिए सुस्ती भी बहुत बड़ा विकार है। कई सुस्त हैं, वह सुस्ती भी अनेकों को नोट होती है, उसको देखकर दूसरे भी सुस्त हो जाते हैं इसलिए अभी बाबा ने जो काम दिया है कि अपनी निराकारी स्थिति बनाओ तो हमारा यही पुरुषार्थ कर्मातीत बनने तक है। एक सेकण्ड में हम निकल जावें इस शरीर से और अशरीरी हो बैठें तब बिन्दु स्वरूप स्थिति बन सकती है। बिन्दु स्वरूप स्थिति बनाने का हमको सदा ध्यान रखना है। यह भी डेली का पुरुषार्थ है, अगर ऐसी निराकारी स्थिति बनती जाये तो यही हमारी सच्ची भट्ठी है और यही हमारी स्वयं के साथ सर्व की सेवा है। इसलिए भट्ठी तो करते परन्तु खुद को देखो ऐसी स्थिति बनी है?

7) हमें एक बात बहुत ही पिंच होती - कोई आकर कहे कि क्या करूँ मेरा स्वभाव ऐसा है जो दूसरों को दु:ख मिलता है। यह कोई जवाब है? मेरा स्वभाव ऐसा है जो दूसरों को दु:ख मिलता है, यह कोई हम बाबा के योगी बच्चों का जवाब है? क्यों मिले दु:ख? हमारे मन वचन कर्म से एक तो सबको शान्ति मिले, दूसरा पवित्रता की प्रेरणा मिलें, तीसरा बाबा का हूँ, सब बाबा का बनें ऐसी उनको प्रेरणा मिलें, चौथा, मेरे हर कार्य से प्रेरणा मिले कि मैं भी ऐसी पक्की ब्रह्माकुमारी, ब्रह्माकुमार बनूँ। ऐसे नहीं कहें कि अरे अभी तक कौन बने हैं? दूर रहना ही ठीक है। बाबा है बस, खत्म। अगर कोई मेरी चलन से, ऐसा कोई डिस्टर्ब होता तो उसका 100 गुणा दण्ड मुझे पड़ता है। एक आत्मा भी बाबा से दूर हो और दूर होने का कारण मैं रहूँ, सूक्ष्म इस जैसा दण्ड कोई दूसरा नहीं। यह पाप है इसलिए सदा यह ध्यान रखें - मुझे अपने मन्सा वाचा कर्मणा से दूसरों को प्रेरणा देनी है - बाबा के समीप आने की। उसकी माला बने। बाबा ने कहा है कि माला के दाने, दाने के समीप आयें, ऐसी माला बनाओ।

8) अब हर एक अपनी ऐसी निराकारी स्थिति बनाओ जिस निराकारी स्थिति से हम सब फरिश्ता बनें या कर्मातीत बनें और हमारे कर्म अकर्म बनें। एक भी ऐसी गलती न हो जिस गलती का 100 गुणा दण्ड मिले क्योंकि ज्ञानी के ऊपर 100 गुणा दण्ड होता है इसलिए सदा अपने को ऊंचे-ते-ऊंची स्थिति पर देखो या अनुभव करो या मेहनत करो। तो साधन है निराकारी स्थिति। अब यह साधना करो। हमारी यही साधना सम्पन्न बनें तब हम बाबा को सीज़न की यह रिजल्ट दे सकेंगे। जो करेगा वो रिटर्न में बाबा की दुआओं का पात्र बनेगा। तो हमारे ऊपर बहुत बड़ी जवाबदारी है - बाबा के लाखों बच्चों की। ऐसे नहीं कि सिर्फ 2-4 फैमिली है या सेन्टर हैं। नहीं। सब बाबा के लाखों बच्चे यहाँ से प्रेरणा लेकर जायें इसलिए स्वीट बाबा के स्वीट बच्चे अपनी स्वीट स्थिति बनाओ। वह स्वीट स्थिति है ही निराकारी, निर्विकारी, निरंहकारी अर्थात् फरिश्ता भव, कर्मातीत भव! अगर सब फरिश्ता हो जायें तो कितना अच्छा हो। तो इसके लिए इतना प्रिय बनो, इतना स्वीट बनो, इतना ही अपनी स्थिति सम्पन्न बनाओ। माया है - यह एक संकल्प में भी न आये, इतने विजयी बनो तब कहेंगे वाह बाबा वाह! वाह आपके बच्चे वाह! तो क्या सम्भव है? मायाजीत हो सकते हैं या नहीं! क्या कहेंगे? या उठने के बाद कहेंगे कि दादी तो कहती हैं परन्तु बड़ा मुश्किल है, ऐसे तो नहीं हो सकता है! या एक एक अन्दर से दृढ़ संकल्प करेंगे कि हम बाबा को मायाजीत बन करके सैम्पल बनके दिखायेंगे! जो यह शिव जयन्ती हर एक सम्पन्न बनने की जयन्ती मनाओ। ऐसी सम्पन्न स्थिति बन सकती है? पुरुषार्थ करो, मेहनत करो। दिल में पक्का संकल्प लो। ऐसी रिजल्ट बाबा को मिले तो बाकी क्या चाहिए। इसलिए हम सभी हैं बाबा के मायाजीत विजयी रत्न। ऐसी रूहरिहान करो, भट्ठियों का पुरुषार्थ करो। ठीक है। अच्छा - ओम् शान्ति।